## चने की उन्नत किस्में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | विशाल | 110–115 | 18–20 |
| 2. | जेजी–16 | 110–120 | 18–20 |
| 3. | जेजी–130 | 110–120 | 18–20 |
| 4. | जेजी–412 | 110–120 | 18–20 |
| 5. | जेजी–63 | 110–120 | 20–25 |
| 6. | जेएकेआई–9218 | 110–115 | 18–20 |
| 7. | जेजी–226 | 110–115 | 18–20 |
| 8. | जेजी–6 | 110–120 | 18–20 |
| 9. | जेजी–14 | 110–120 | 18–20 |
| 10. | आरवीजी–201 | 95–110 | 20–25 |
| 11. | आरवीजी–202 | 100–105 | 18–20 |
| 12. | जेजी–12 | 110–120 | 20–22 |

## अलसी की उन्नत किस्में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | जेएलएस–27 | 115–120 | 15–18 |
| 2. | जेएलएस–66 | 110–115 | 12–14 |
| 3. | जेएलएस–67 | 110–115 | 12–14 |
| 4. | जेएलएस–73 | 110–115 | 10–12 |
| 5. | पीकेडीएल–41 | 110–115 | 15–17 |

## मटर की उन्नत किस्में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | प्रकाश | 100–120 | 20–25 |
| 2. | विकास | 100–105 | 20–25 |
| 3. | आदर्श | 110–115 | 20–25 |
| 4. | केपीएमआर–400 | 110–115 | 20–22 |
| 5. | आईपीएफ–4–9 | 120–130 | 15–20 |
| 6. | आईपीएफडी10–12 | 110–125 | 22–25 |

डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

Krishak Jagat Printing Works
9826255861

# रबी मौसम में कम पानी वाली फसलें व उन्नत किस्में

कलेक्टर
जिला– रायसेन

उपसंचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग
जिला– रायसेन

# रबी मौसम में कम पानी वाली फसलें व उन्नत किस्में

- **असिंचित अवस्था के लिए** (15 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक) गेहूं की शरबती किस्म सी-306, एच.डब्ल्यू -2004 (अमर), जे.डब्ल्यू-17 (स्वप्निल), एच.आई.-1500 (अमृता) किस्मों का चयन करें।
- **अर्द्धसिंचित अवस्था के लिये** (15 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक) एक सिंचाई उपलब्ध होने पर जे.डब्ल्यू.-3020, जे.डब्ल्यू.-3173, जे.डब्ल्यू.-3288, एच.आई.-1531 (हर्षिता), कठिया गेहूं की एच.आई.-8627 (मालव कीर्ति) किस्मों का चयन करें।
- **सिंचित अवस्था व समय से बुवाई के लिये** (10 नवम्बर से 25 नवम्बर तक) दो सिंचाई उपलब्ध होने पर जे.डब्ल्यू.-1201, जे डब्ल्यू.-1202, जे.डब्ल्यू.-3211, एच.आई.-1544 (पूर्णा) व कठिया गेहूं की एच.आई.-8498 (मालव शक्ति), एम.पी. ओ.-1106 (सुधा) किस्मों का चयन करें।
- सिंचित अवस्था व तीन सिंचाई उपलब्ध होने पर एच.आई.-8713 (पूसा मंगल), एच.आई.-8737 (पूसा अनमोल), एच.आई.8663 (पोषण) किस्मों का चयन करें।
- **धान** - गेहूं फसल प्रणाली में गेहूं की देरी से बुवाई (25 दिसम्बर तक) हेतु जे.डब्ल्यू.-1203, जे.डब्ल्यू.-4010, एम.पी.-3336, एच.डी.-2932 किस्मों का चयन करें।
- **10 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक चने की नवीनतम किस्में** जे.जी.-6, जे.जी.-12, जे.जी.-16, जे.जी.-63, जे.जी.-130, आर.व्ही.जी.-202 किस्मों का चयन करें।
- **10 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक मसूर की नवीनतम किस्में** एच.यू.ए.-57, डी.पी.एल-62, पी.एल.-8, जे.एल.-3, आई.पी.एल.-81, आई.पी.एल.-316, आर.व्ही.एल-31 किस्मों का चयन करें।
- **15 अक्टूबर के बाद अलसी की नवीनतम असिंचित किस्में** जे.एल.एस.-9, जे.एल.एस.-66, जे.एल.एस.-67 जे.एल.एस-73 तथा सिंचित किस्में जे.एल.एस.-27, जे.एल.एस.-79 व पी.के.डी.एल.-41 का चयन करें।
- **25 सितम्बर के बाद मटर की नवीनतम किस्में** पी.एस.एम.-3, अर्किल, रचना, प्रकाश, आदर्श, विकास किस्मों का चयन करें।

## गेहूं की उन्नत किस्में

### असिंचित अवस्था में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | एचडब्ल्यू-2004 (अमर) | 130-135 | 15-18 |
| 2. | एचडी-4672 (मालवरत्न) | 120-125 | 15-18 |
| 3. | एचआई-1500 (अमृता) | 120-125 | 15-18 |

### अर्धसिंचित अवस्था में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | एचआई -1605 | 105-110 | 40-45 |
| 2. | जेडब्ल्यू-3020 | 130-135 | 30-35 |
| 3. | एचआई-8627 (मालवकीर्ति) | 130-135 | 35-40 |
| 4. | एचआई-1531 (हर्षिता) | 130-135 | 40-45 |
| 5. | जेडब्ल्यू-3173 | 120-130 | 35-40 |

### देरी से बुवाई हेतु

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | एचआई -1563 | 110-115 | 45-47 |
| 2. | एमपी-1202 | 110-115 | 40-45 |
| 3. | एमपी-1203 | 110-115 | 40-45 |
| 4. | एमपी-3288 | 115-120 | 40-47 |
| 5. | एमपी-3336 | 110-115 | 40-45 |

### मसूर की उन्नति किस्में

| क्र. | किस्म | अवधि (दिन) | उपज (क्विं./हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | एचयूएल-57 | 110-115 | 15-18 |
| 2. | डीपीएल-62 | 110-120 | 15-18 |
| 3. | नूरी | 110-120 | 15-18 |
| 4. | एल-4594 | 110-120 | 12-15 |
| 5. | आईपीएल-316 | 110-115 | 14-15 |
| 6. | आरवीएल-30 | 105-110 | 14-15 |
| 7. | आरवीएल-31 | 105-115 | 14-15 |

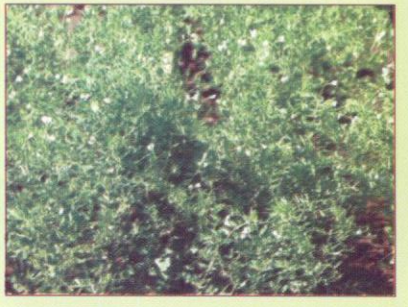

**नियंत्रण** –

- उन्नत किस्मों की बुवाई समय पर करें।
- मटर के बीज को बुवाई पूर्व ट्राइकोडर्मा विरिडी नामक फफूंदनाशक 5 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें।

**पाउडरी मिल्डयू**

इस रोग में पत्तियों की सतह पर सफेद धब्बे दिखाई देते हैं। धीरे-धीरे ये तनों व फल्लियों पर पहुंच जाते हैं ये धब्बे एक सफेद पाउडर के रूप में फसल में फैल जाते हैं तथा फसल की पैदावार को प्रभावित करते हैं।

**नियंत्रण** – इस रोग का प्रकोप दिखते ही घुलनशील सल्फर 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें या कैराथियॉन 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।

**तना छेदक व फली भेदक कीट**

तना छेदक कीट का अगेती फसल पर ज्यादा प्रकोप होता है। यह कीट अंकुरण पश्चात भूमि की सतह के ऊपर से तने में छेद करके प्रवेश करता है जिससे पौधा पीला होकर मर जाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु कार्बोसल्फ्यूरॉन 20-25 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई पूर्व मिट्टी में मिलायें। फलछेदक कीट के नियंत्रण के लिये क्विनालफॉस 2 एम.एल. दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

**तुड़ाई**

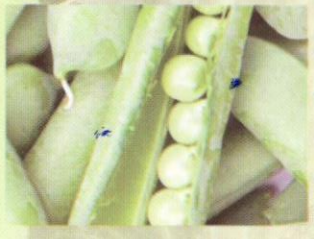

हरी फल्लियों की तुड़ाई उस समय करना चाहिए जब उसमें दाना अच्छी तरह भर जाये तथा फल्लियों का रंग गहरे हरे रंग में बदलना शुरू हो जाये। जहां तक संभव हो फल्लियों की तुड़ाई सुबह या शाम के समय करें।

डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

Krishak Jagat Printing Works
9826255861

# मटर की
## उन्नत उत्पादन तकनीक

कलेक्टर
जिला– रायसेन

उपसंचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग
जिला– रायसेन

# मटर की उन्नत उत्पादन तकनीक

## भूमि की तैयारी

मटर की खेती सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है जहां पर जल भराव की स्थिति न हो। मटर की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये उत्तम जल निकास वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। खरीफ फसलों की कटाई के बाद सर्वप्रथम भूमि की जुताई दो बार करके खेत की मिट्टी को भुरभुरी बना लेना चाहिये एवं पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिये।

## बीज दर

बुवाई हेतु स्वस्थ व प्रमाणित बीजों का उपयोग करें। जल्दी पकने वाली (अगेती) जातियों के लिये 100 से 125 कि.ग्रा./हेक्टर व मध्यम व देर से पकने वाली जातियों के लिये 60-80 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से बीज का प्रयोग करना चाहिये।

**उन्नत किस्में** – मटर की उन्नत किस्मों का विवरण तालिका में दिया गया है–

| प्रजाति | अवधि (दिन) | उपज (हरी फली क्विं./हेक्टेयर) | विशेषताएं |
|---|---|---|---|
| अर्किल | 60-65 | 50-60 | पकने की अवधि 60-65 दिन, पौधे छोटे, फली में दानों की संख्या 7-8 |
| जवाहर मटर-4 | 60-65 | 50-60 | जल्दी पकने वाली प्रजाति, फली में दानों की संख्या 5-6 |
| पीएसएम-3 | 60-65 | 95-100 | पकने की अवधि 60-65 दिन, पौधे छोटे, फली में दानों की संख्या 7-8 |
| काशी नंदनी | 50-55 | 80-95 | जल्दी पकने वाली प्रजाति, पौधे छोटे व हरे |
| वोनविले | 80-85 | 80-90 | मध्यम अवधि में पकने वाली जाति |
| आईपीएस-77 | 90-95 | 120-125 | देर से पकने वाली प्रजाति, फली में दानों की संख्या 6-7 |
| आईपीएस-293 | 90-95 | 125-130 | देर से पकने वाली प्रजाति, फली में दानों की संख्या 7-8 |

## बीजोपचार

मटर के बीज को बुवाई पूर्व थायरम कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज से अवश्य उपचारित करें। हल्की भूमियों में यदि दीमक की समस्या हो तो मटर के बीज को कीटनाशक दवा क्लोरोपाइरीफास दवा 5 एम.एल. प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। मटर एक दलहनी फसल है अत: रसायनिक उपचार के बाद राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

## बुवाई समय व विधि

मटर की जल्दी पकने वाली जातियों की बुवाई सितम्बर माह के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में करना चाहिये तथा मध्यम अवधि एवं देर से पकने वाली जातियों की बुवाई अक्टूबर से दूसरे सप्ताह से नवम्बर के मध्य सप्ताह तक कर देना चाहिये।

मटर की ऊंची बढ़ने वाली जातियों के लिए कतार से कतार की दूरी 40 से 50 से.मी. व कम बढ़ने वाली जातियों को 30 से 40 से.मी. की दूरी पर व मटर के बीज की बुवाई 3-4 से.मी. की गहराई पर करना चाहिये।

## खाद व उर्वरक

मटर में भी अन्य दलहनी फसलों की तरह 40 कि.ग्रा. फास्फोरस का प्रयोग जड़ों के विकास एवं जड़ों में जीवाणुओं की गांठों के बनाने के लिये उपयुक्त होता है। इसकी पूर्ति डीएपी खाद 100 कि.ग्रा प्रति हेक्टेयर देकर की जा सकती है। सामान्यत: दलहनी फसलों में नत्रजन की आवश्यकता कम पड़ती है, परंतु मटर की बोनी प्रजातियों में 30-40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से नत्रजन का प्रयोग करने पर अधिक पैदावार प्राप्त होती है।

## सिंचाई

मटर की बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी न हो तो पलेवा कर बुवाई करें। मटर का पौधा कम पानी चाहने वाला होता है। अत: खेत में कहीं भी जल भराव की स्थिति न बनने दें। मटर की फसल में आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई 30-35 दिन (फूल आने के पहले) व दूसरी सिंचाई फल्ली में दाने भरते समय करें।

## उकटा रोग

इस रोग में पौधे प्रारंभिक अवस्था से ही प्रभावित होने लगते हैं। पौधे में पीलापन आने के साथ-साथ सूखने लगते हैं। इसके लक्षण निचली पत्तियों से शुरू होते हैं प्राय: जड़ों की वृद्धि रुक जाती है व सड़ जाती हैं।

व्यवस्था की जा सकती है।

उतेरा खेती के लिए 43 किलो यूरिया धान की फसल काटने के बाद खेत में बिखेरना चाहिए। इसके अलावा फास्फेट 15 किग्रा की दर से फूल आने एवं फलियां बनते समय फसल पर छिड़कें।

**सिंचाई :–** मसूर को अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है। एक सिंचाई फूल आने के पूर्व बोनी के 40–50 दिन बाद देने से उपज में लाभ होता है। मावठा हो तो सिंचाई न करें।

**निंदाई–गुड़ाई :–** बोने के 40–45 दिनों तक फसल खरपतवारों से मुक्त रहना जरूरी होता है।

**पौध संरक्षण –**

**गेरूआ रोग से बचाव : –** जनवरी–फरवरी में मावठा गिरने एवं नमी होने पर मसूर पर गेरूआ लग सकता है. रोग दिखते ही फसल पर मेन्कोजेब 0.25 प्रतिशत घोल (2.5 ग्राम दवा 1 लीटर पानी में) का छिड़काव करें। जरूरत पड़ने पर एक पखवाड़े बाद दोबारा छिड़काव करें।

**माहो–** माहो की रोकथाम के लिये डायमिथियेट 30 ई.सी. 500 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें

डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

Krishak Jagat Printing Works
9826255861

# मसूर

## उत्पादन तकनीकी

कलेक्टर
जिला– रायसेन (म.प्र.)

उप संचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास
जिला– रायसेन (म.प्र.)

**भूमि एवं तैयारी :–** दोमट से भारी भूमि मसूर के लिए उपयुक्त होती है। खरीफ फसल की कटाई के बाद 2–3 हल्की जुताई कर नमी संचय के लिए पाटा लगाना चाहिए। मसूर के लिए अधिक भुर–भुरी व बारीक मिट्टी की आवश्यकता होती है। यह ध्यान रहे कि खेत में बिना सड़ा कम्पोस्ट खाद, कचरा न रहे। धान के बाद खाली छोड़े गये खेतों में भी मसूर सफलतापूर्वक ली जा सकती है। धान के क्षेत्रों में इसकी खेती उतेरा पद्धति से की जा सकती है।

**जातियाँ :–** एचयूएल–57, डीपीएल–62, नूरी, एल–4594, आईपीएल–316, आरवीएल–30, आरवीएल–31

**बीज की मात्रा :–** खेत में वांछित पौध संख्या प्राप्त करने के लिए बड़े दाने वाली जाति का 50 किलोग्राम व छोटे दाने वाली जाति का 40 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टर बोना चाहिए।

**बीजोपचार :–** बीज को थायरम+ कार्बेंडाजिम के 2:1 अनुपात के 3 ग्राम मिश्रण प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करें। तत्पश्चात् 5 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर प्रति किलोग्राम बीज की दर से प्रयोग करें। बीजोपचार के बाद बीज को छाया में सुखा कर बोएं।

**बोनी का समय व तरीका :–** उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक है। बोनी देशी हल, दुफन, तिफन या उन्नत बोनी यंत्र द्वारा कतारों में ही करें। कतारों से कतारों की दूरी 25–30 से.मी. (10–12 इंच) रखें और बीज 5–7 से.मी. की गहराई पर बोयें। पिछेती बोनी के लिए यह दूरी घटाकर 15–20 से.मी. कर देना चाहिए।

**खाद एवं उर्वरक :–** भूमि में नमी के अनुसार 10–40 किग्रा यूरिया तथा 250 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट प्रति हे. की जरूरत होती है जिसे 80 किग्रा डीएपी प्रति हेक्टर बोते समय देकर प्राप्त किया जा सकता है। गंधक की कमी वाले क्षेत्रों में 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टर 100 किग्रा जिप्सम के रूप में देना चाहिए।

जस्ते की कमी की स्थिति में फसल पर जिंक सल्फेट 5 ग्राम+चूना 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़कने से उपज में वृद्धि होती है। अगर मिट्टी में नमी कम है तो खाद की मात्रा कम कर देना चाहिए। उर्वरकों की पूरी मात्रा बोनी के समय इस प्रकार दें जिससे वह बीज के कुछ नीचे गिरे। इसके लिए ट्रैक्टर से चलने वाले बोनी यंत्र उपलब्ध हैं। देशी बोनी यंत्र में भी आगे– पीछे दो पोर लगा कर ऐसी

अंकुरण पूर्व 500–600 लीटर पानी में मिलाकर खेत में छिड़काव करें।

**जल प्रबंधन–** अलसी के अच्छे उत्पादन के लिये विभिन्न क्रांतिक अवस्थाओं पर 2 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। यदि दो सिंचाई उपलब्ध हो तो प्रथम सिंचाई बुवाई के एक माह बाद एवं द्वितीय सिंचाई फल आने से पहले करना चाहिये। सिंचाई के साथ–साथ प्रक्षेत्र में जल निकास का भी उचित प्रबंध होना चाहिये। प्रथम एवं द्वितीय सिचाई क्रमशः 30–35 व 60 से 65 दिन की फसल अवस्था पर करें।

**रोग व कीट नियंत्रण**

| | |
|---|---|
| 1. रतुआ रोग | कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) या डाएथेन एमृ 45 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। |
| 2. चूर्णी फफूंदी रोग | घुलनशील गंधक (0.3 प्रतिशत) व कैराथिन (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। |
| 3. आल्टरनेरिया अंगमारी | थायरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित कर बुवाई करें। डाएथेन एम–45 का 0.25 प्रतिशत का छिड़काव करें। |
| 4. अलसी बड फ्लाई | क्विनालफॉस 1.25 लीटर/हेक्टेयर का छिड़काव करें। |

**फसल की कटाई एवं गहाई** – जब पौधों की पत्तियां सूख जायें, बोडियां भूरी पड़ जायें व दाने चमकीले हो जायें तब फसल की कटाई कर लेना चाहिए एवं बीज का सुरक्षित भण्डारण करें।

डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

Krishak Jagat Printing Works
9826255861

# अलसी

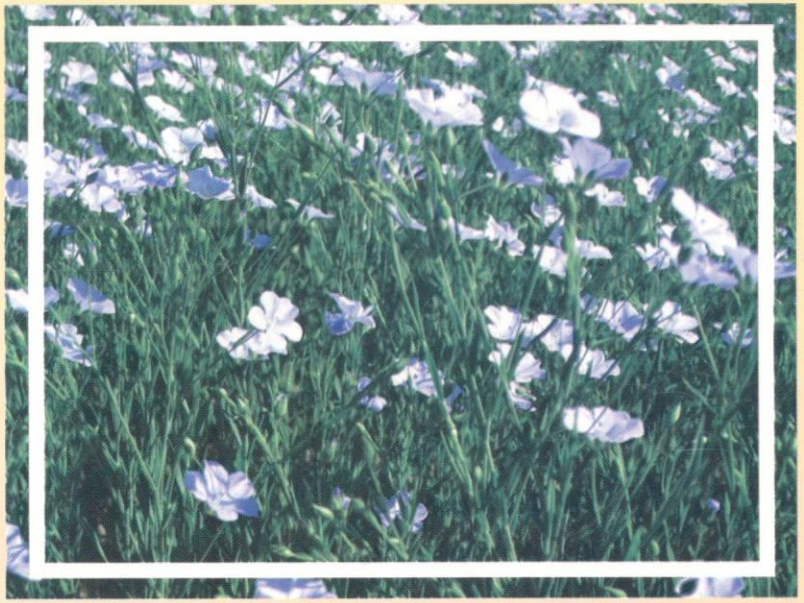

कलेक्टर
जिला– रायसेन

उपसंचालक
किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग
जिला– रायसेन

# अलसी

**अलसी के कम उत्पादकता के कारण–**

1. कम उपजाऊ भूमि पर खेती करना
2. असिंचित दशा अथवा वर्षा आधारित स्थिति में खेती करना
3. स्थानीय किस्मों का प्रचलन व उच्च उत्पादन देने वाली किस्मों का अभाव
4. असंतुलित एवं कम मात्रा में उर्वरकों का उपयोग
5. कीट बीमारियों हेतु उचित पौध संरक्षण के उपायों को न अपनाना ।

**जलवायु–** अलसी की फसल को ठंडे व शुष्क जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। अलसी के उचित अंकुरण हेतु 25–30 डिग्री से.ग्रे. तापमान तथा बीज बनते समय तापमान 15–20 डिग्री से.ग्रे. होना चाहिए। अलसी के वृद्धि काल में भारी वर्षा व बादल छाये रहना बहुत ही हानिकारक साबित होते हैं। परिपक्वन अवस्था पर उच्च तापमान, कम नमी तथा शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती है ।

**भूमि का चुनाव–** अलसी की फसल के लिये काली भारी एवं दोमट (मटियार) मिट्टियां उपयुक्त होती हैं। अधिक उपजाऊ मृदाओं की अपेक्षा मध्यम उपजाऊ मृदायें अच्छी समझी जाती हैं। भूमि में उचित जल निकास का प्रबंध होना चाहिए ।

**खेत की तैयारी–** अलसी का अच्छा अंकुरण प्राप्त करने के लिये खेत भुरभुरा एवं खरपतवार रहित होना चाहिये । अतः खेत को 2–3 बार हैरो चलाकर पाटा लगाना आवश्यक है जिससे नमी संरक्षित रह सके । अलसी का दाना छोटा एवं महीन होता है, अतः अच्छे अंकुरण हेतु खेत का भुरभुरा होना अति आवश्यक है ।

**उन्नतशील प्रजातियां–** जवाहर अलसी–23, जवाहर अलसी–9 जे.एल..एस.–66,जे.एल.एस.–67, जे.एल.एस.–73

**बुवाई का समय–** असिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में तथा सिचिंत क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में बुवाई करना चाहिये। उतेरा जल्दी बोनी करने पर अलसी की फसल को फली मक्खी एवं पाउडरी मिल्डयू आदि से बचाया जा सकता है।

**बीज दर एवं अंतरण–** अलसी की बुवाई 25–30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से करनी चाहिये। कतार से कतार के बीच की दूरी 30 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 5–7 सेमी रखनी चाहिये। बीज को भूमि में 2–3 सेमी की गहराई पर बोना चाहिये।

**बीजोपचार–** बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम की 2.5 से 3 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिये अथवा ट्राइकोडर्मा विरीडी की 5 ग्राम मात्रा अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम की 5 ग्राम एवं कार्बोक्सिन की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित कर बुवाई करनी चाहिये।

**पोषक तत्व प्रबंधन–** अलसी की फसल के बेहतर उत्पादन हेतु अच्छी तरह से पकी हुई गोबर खाद 4–5 टन/हे. अन्तिम जुताई के समय खेत में अच्छी तरह से मिला देना चाहिये । मिट्टी परीक्षण अनुसार उर्वरकों का प्रयोग अधिक लाभकारी होता है। अलसी को असिंचित अवस्था में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश की क्रमशः 40:20:20 किग्रा./हे. देना चाहिये । बोने के पहले सीडड्रिल से 2–3 से.मी. की गहराई पर उर्वरकों की पूरी मात्रा देना चाहिये।

सिंचित अवस्था में अलसी फसल को नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की क्रमशः 60–80:40:20 कि.ग्रा./हे. देना चाहिये । नाइट्रोजन की आधी मात्रा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बोने के पहले तथा बची हुई नाईट्रोजन की मात्रा प्रथम सिंचाई के तुरन्त बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में देना चाहिये

**खरपतवार प्रबंधन–** खरपतवार प्रबंधन के लिये बुवाई के 20 से 25 दिन पश्चात पहली निंदाई–गुड़ाई एवं 40–45 दिन पश्चात दूसरी निंदाई–गुड़ाई करनी चाहिये। अलसी की फसल में रसायनिक विधि से खरपतवार प्रबंधन हेतु पेंडीमिथालीन 1 किलोग्राम सक्रिय तत्व को बुवाई के पश्चात एवं